भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 181
उत्तर देने की तारीख 21.07.2025

अहोबिलम के श्री नरसिम्हा स्वामी मंदिर में मनाया जाने वाला पारुवेत उत्सव

181. डॉ. गुम्मा तनुजा रानी :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) यूनेस्को द्वारा यथा-घोषित अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार अहोबिलम स्थित श्री नरसिम्हा स्वामी मंदिर में मनाए जाने वाले वार्षिक 'पारुवेत' उत्सव को यूनेस्को द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दिलाने के लिए प्रयास कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार का देश में सभी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत प्रथाओं का सर्वेक्षण कराने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार का देश में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत प्रथाओं के संवर्धन और संरक्षण के लिए एक पृथक नोडल एजेंसी बनाने का विचार है; और

(ड.) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) की सुरक्षा हेतु यूनेस्को के 2003 के कन्वेंशन के अनुरूप, भारत ने अपनी विद्यमान सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जुलाई 2025 तक, भारत के कुल पंद्रह अवयवों को यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया गया है। **(सूची अनुलग्नक-1 पर संलग्न है)**। भारत से गुजरात का गरबा इस सूची में शामिल नवीनतम अवयव है जिसे दिसंबर 2023 में शामिल किया गया है। यूनेस्को के नवीनतम

प्रक्रियात्मक निर्देशों के अनुसार, नामांकन प्रत्येक सदस्य देश को हर दो वर्षों में केवल एक संभावित नामांकन करने की अनुमति होगी। इस परिप्रेक्ष्य में, भारत ने 2024-25 चक्र के लिए "दीपावली" पर्व को नामांकित किया है। इस नामांकन पर अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की संरक्षा हेतु अंतर-सरकारी समिति के 20वें सत्र के दौरान विचार किया जाएगा, जो दिसंबर 2025 में नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।

भारत की सांस्कृतिक विरासत के परिरक्षण, संवर्धन और प्रसार के प्रयासों को और भी सुदृढ़ करने के लिए, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने बृहत्तर भारत (ग्रेटर इंडिया) परियोजना शुरू की है। यह प्रमुख पहल, जो मुख्य रूप से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है, पौराणिक कथाओं, इतिहास, विज्ञान, पुरातत्व, साहित्य और समकालीन प्रासंगिकता को जोड़ने वाले एक व्यापक कथानक के माध्यम से भारत की सभ्यतागत निरंतरता को प्रस्तुत करने पर केंद्रित है। यह परियोजना मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के मानचित्रण, संरक्षण और डिजिटल एकीकरण पर बल देती है, और प्रदर्शनियों, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और क्षमता निर्माण पहलों के माध्यम से जन सहभागिता को बढ़ावा देती है। यह समृद्ध अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के प्रति गहरी समझ को बढ़ावा देते हुए विशिष्ट रूप से वैश्विक समुदाय के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत करने का प्रयास करती है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जिनका भारत के साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध है।

इन राष्ट्रीय प्रयासों के एक प्रमुख घटक के रूप में, संगीत नाटक अकादमी (एसएनए) को संस्कृति मंत्रालय द्वारा विभिन्न यूनेस्को आईसीएच सूचियों में भारत के नामांकनों के समन्वय हेतु नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया गया है। एसएनए अपने परामर्शदाता निकाय के अनुमोदन से सूची में अवयवों को शामिल करते हुए भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की राष्ट्रीय सूची के विकास और रखरखाव के लिए भी उत्तरदायी है। यह अकादमी मंच कलाओं और अन्य आईसीएच अवयवों, विशेषकर "प्रगतिशील" के रूप में वर्गीकृत अवयवों का नियमित रूप से प्रलेखन और डिजिटल संग्रहण करती है, जिससे व्यवस्थित परिरक्षण सुनिश्चित होता है। एसएनए सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, हितधारकों और छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए पूरे भारत में क्षमता निर्माण कार्यशालाएँ भी आयोजित करती है। इन पहलों के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय सूची में अवयवों को शामिल किए जाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अनुरोधों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, एसएनए आईसीएच की संरक्षा में योगदान को बढ़ावा देने और मान्यता देने के माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित कलाकारों को पुरस्कृत करता है और पत्रिकाओं, पुस्तकों तथा मोनोग्राफों सहित अपने व्यापक प्रकाशन कार्यक्रम के माध्यम से अकादमिक और सार्वजनिक समझ में योगदान देता है। इसके अलावा, 2013 से 2016 तक संचालित "भारत की अमूर्त विरासत

और विविध सांस्कृतिक परंपराओं की संरक्षा हेतु स्कीम" के अंतर्गत, आईसीएच अवयवों के परिरक्षण और संवर्धन में कार्यरत विभिन्न संगठनों, नागरिक सोसाइटी समूहों, स्थानीय समुदायों और व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई। इन व्यापक और समन्वित उपायों के माध्यम से, भारत यूनेस्को के वैश्विक उद्देश्यों के अनुरूप अपनी विविध अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की संरक्षा करने और उसे लोकप्रिय बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता रहा है।

(ख): ऐसा कोई प्रस्ताव संस्कृति मंत्रालय में विचाराधीन नहीं है।

(ग): ऐसा कोई प्रस्ताव संस्कृति मंत्रालय में विचाराधीन नहीं है।

(घ) और (ड.): भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने यूनेस्को की विभिन्न अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) सूचियों में भारत के नामांकन हेतु समन्वयन के साथ-साथ आईसीएच की राष्ट्रीय सूची के विकास और रखरखाव जैसे संबंधित दायित्वों को पूरा करने के लिए संगीत नाटक अकादमी को नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया है।

*****

अनुलग्नक-I

'अहोबिलम के श्री नरसिम्हा स्वामी मंदिर में मनाया जाने वाला पारुवेत उत्सव' के संबंध में दिनांक 21 जुलाई, 2025 को पूछे गए लोक सभा अतारांकित प्रश्न संख्या 181 के भाग (क) के उत्तर में उल्लिखित अनुलग्नक

यूनेस्को की मानवता की आईसीएच की प्रतिनिधि सूची में शामिल भारत की आईसीएच विरासत

क्र. सं.	आईसीएच के तत्व	शामिल किए जाने का वर्ष
1.	वैदिक मंत्रोच्चारण की परंपरा	2008
2.	रामायण की पारंपरिक प्रस्तुति, रामलीला	2008
3.	कूड़ियाट्टम, संस्कृत रंगमंच	2008
4.	गढ़वाल हिमालय, भारत का धार्मिक उत्सव और अनुष्ठान रंगमंच, रम्मन	2009
5.	केरल का धार्मिक संस्कार संबंधी रंगमंच और नृत्य नाटक, मुडियेट्ट	2010
6.	राजस्थान के कालबेलिया लोक गीत और नृत्य	2010
7.	छऊ नृत्य	2010
8.	लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चारण: हिमालय-पार लद्दाख क्षेत्र, जम्मू और कश्मीर, भारत में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का सस्वर पाठ	2012
9.	मणिपुर का अनुष्ठान गायन, ड्रम वादन और नृत्य, संकीर्तन	2013
10.	जनदियाला गुरु, पंजाब, भारत के ठठेरे द्वारा पीतल और तांबे के बर्तन बनाने की पारंपरिक शिल्पकला	2014
11.	योग	2016
12.	नौरूज़, नॉवरूज़, नौरूज़, नौरिज़, नूरूज़, नौरूज़, नॉवरूज़, नवरूज, नेवरूज़	2016
13.	कुम्भ मेला	2017
14.	कोलकाता में दुर्गा पूजा	2021
15.	गुजरात का गरबा	2023

इसके अतिरिक्त, "दीपावली" को 2024-25 चक्र में इस सूची में शामिल करने के लिए भारत की ओर से नामांकित किया गया है।

***